Vol 6 Issue 10 April 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

बैगा जनजाति में परम्परागत एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन(संदर्भ–जिला शहडोल)

रोशनलाल सिंह
अतिथि विद्वान , समाजशास्त्र
शासकीय महाविद्यालय देवेन्द्र नगर जिला पन्ना(म. प्र.)

सारांश–
विश्व समाज दो समूहों में विभाजित है, पहला नगरीय समाज दूसरा ग्रामीण समाज। नगरीय समाज में सभ्य एवं आधुनिक कहे जाने वाले व्यक्ति निवास करते हैं, जबकि ग्रामीण समाज में सरल एवं असभ्य कहे जाने वाले लोग रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे कई दूरस्थ ग्रामीण अंचल है जहॉ के लोग सभ्यता से कोसों दूर हैं। आज भी उन लोगों तक सुविधाओं का अभाव है। ऐसी ही एक प्राचीन जनजाति है बैगा जो शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में फैले हुए हैं। सुविधाओं के अभाव के कारण आज भी ये जनजाति अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धति पर पूर्ण विश्वास एवं आस्था रखती है। किसी भी समाज एवं व्यक्ति का विकास उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है जो समाज या व्यक्ति मानसिक, शारीरिक एवं दैहिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ्य होगा वही विकास के पथ पर आगे बढ़ पाता है, क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क निवास करता है। इस प्रकार स्वस्थ्य मस्तिष्क से सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं, जिससे व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक विकास कर पाता है।

जनजातियों की चिकित्सा व्यवस्था अंधविश्वास पर आधारित है इलाज हेतु आधुनिक चिकित्सा केन्द्रों की ओर न जाकर वे सर्वप्रथम पुजारी अथवा शमन की शरण लेते हैं। बीमारी को वे दैवी प्रकोप के रूप में मानते है, आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की पद्धतियों को अपनाने की दिशा में जनजातियॉ काफी पीछे है।

वर्तमान वातावरणीय परिवेश जनजातीय समाज को भी प्रभावित किया है प्राचीन समय में जनजातीय लोगों का स्वास्थ्य बहुत बुरा नहीं था परन्तु लगातार संक्रमण से अक्सर बीमारियों का सामना करना पड़ता है। वैसे तो जनजातियॉ बहुत सी बीमारियों से ग्रस्त रहती है। परन्तु सबसे अधिक मात्रा में जल संक्रमण रोग पाये जाते है। जिन स्थानों पर प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध है वहां पर भी जल गंदा व दूषित होता है। फलस्वरूप अधिकतर लोग पेट–ऑत तथा चर्म रोगों के शिकार हो जाते है।प्रस्तुत शोध बैगा जनजाति में परम्परागत एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषणात्मक शोध कार्य है।

मुख्य शब्द– बैगाजनजाति,परम्परागत एवं आधुनिकचिकित्सा पद्धतिएवशहडोल.

प्रस्तावना–

किसी भी समाज एवं व्यक्ति का विकास उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है जो समाज या व्यक्ति मानसिक, शारीरिक एवं दैहिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ्य होगा वही विकास के पथ पर आगे बढ़ पाता है, क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क निवास करता है। इस प्रकार स्वस्थ्य मस्तिष्क से सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं, जिससे व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक विकास कर पाता है।जनजातियों की चिकित्सा व्यवस्था अंधविश्वास पर आधारित है इलाज हेतु आधुनिक चिकित्सा केन्द्रों की ओर न जाकर वे सर्वप्रथम पुजारी अथवा शमन की शरण लेते हैं। बीमारी को वे दैवी प्रकोप के रूप में मानते है, आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की पद्धतियों को अपनाने की दिशा में जनजातियॉ काफी पीछे है।वर्तमान वातावरणीय परिवेश जनजातीय समाज को भी प्रभावित किया है प्राचीन समय में जनजातीय लोगों का स्वास्थ्य बहुत बुरा नहीं था परन्तु लगातार संक्रमण से अक्सर बीमारियों का सामना करना पड़ता है। वैसे तो जनजातियॉ बहुत सी बीमारियों से ग्रस्त रहती है। परन्तु सबसे अधिक मात्रा में जल संक्रमण रोग पाये जाते है। जिन स्थानों पर प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध है वहां पर भी जल गंदा व दूषित होता है। फलस्वरूप अधिकतर लोग पेट–ऑत तथा चर्म रोगों के शिकार हो जाते है।खनिज तथा अन्य पोषक तत्वों की कमी से बीमारियां हो जाती है। हिमालय क्षेत्र में घेघा जैसी गले की बीमारी अधिक है। इसका कारण है आयोडीन की कमी। इसी क्षेत्र में घेघा जैसी गले की बीमारी अधिक है। इसी क्षेत्र की जनजातियों में यौन रोग की बहुतायत है। पोषक तत्वों की कमी के कारण बहुत सी जनजातियों में क्षय रोग का अधिक्य है। ढेबर आयोग के अनुसार कुष्ठ एक ऐसा रोग है जिससे जनजातीय लोग सदा भयभीत रहते है।

बैगा जनजाति के गॉव सामान्यतः जंगलों एवं पहाड़ों पर होते हैं। जंगलों एवं पहाड़ों पर निवास स्थान होने के कारण वे लोग जड़ी–बूटियों का अच्छा ज्ञान रखते हैं। वैसे भी इनकी परम्परागत चिकित्सा इनके स्वास्थ्य का मूल आधार है। तंत्र–मंत्र–झॉड़–फूॅक इनकी परम्परागत चिकित्सा का एक स्वरूप है जिसके माध्यम से ये लोग मनोवैज्ञानिक इलाज करते हैं।पंचायती राज व्यवस्था ने सभी समाजों को प्रभावित किया है गॉवों का विकास, प्रौद्योगिकी विकास, भारत में लगातार हो रहा है। संचार सेवाओं में कुछ दशकों से क्रांति आई हैं, जिससे नई तकनीकी एवं आधुनिक विधियों का प्रवेश इन

जनजातियों के जीवन में होना स्वाभाविक है। अब ये लोग भी आधुनिक चिकित्सा पद्धति का प्रयोग अपने बीमारी से मुक्ति के लिए करने लगे है।

परम्परागत चिकित्सा पद्धति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन करना शोध का मुख्य उद्देश्य है। परम्परागत चिकित्सा का इनके जीवन में क्या योगदान है। उसके परिणाम कैसे रहे हैं एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति उनके सामाजिक जीवन को किस हद तक प्रभावित किया है। प्रभाव सकारात्मक हो रहे हैं या नकारात्मक का मूल्यांकन किया जायेगा।

अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्व –

प्रस्तुत शोध बैगा जनजाति में परम्परागत एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषणात्मक शोध कार्य है जो निम्नांकित है –

1. बैगा जनजाति की परम्परागत चिकित्सा पद्धति का अवलोकन करना।
2. बैगा जनजाति के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात करना।
3. आधुनिक चिकित्सा पद्धति अपनाने की स्थिति को ज्ञात करना।
4. बैगा जनजाति की सामाजिक आर्थिक दशा ज्ञात करना।
5. दुर्लभ प्रजाति की जड़ी–बूटियों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी जिससे उनका संरक्षण एवं संवर्धन में सहायता मिलेगी।
6. बैगा जनजाति के परम्परागत जीवन, सामाजिक दृष्टिकोण, रहन–सहन का स्तर, सामाजिक स्थिति इन सभी तथ्यों की नवीन जानकारी प्राप्त करना।
7. बैगा जनजातियों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें, उनके विचार और दृष्टिकोण को पता करना।
8. बैगा जनजातियों के रूढ़िवादी, अंधविश्वास जनित स्वास्थ्य सम्बन्धी अवधारणाओं को ज्ञात करना।
9. अध्ययन से बैगा जनजातियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के निदान के लिए बनाई जाने वाली नीति, निर्धारण हेतु नवीन तथ्यों को ज्ञात करना।
10. होने वाली बीमारियों के कारणों को ज्ञात करना।

शोध प्रविधि एवं शोध क्षेत्र का परिचयः –

एक उत्तम शोध कार्य के लिए आवश्यक है उचित अध्ययन पद्धति का चुनाव करना। अध्ययन पद्धति वैज्ञानिक मानदण्ड के अनुसार हो जो तथ्यों को वैज्ञानिकता प्रदान कर सके। तथ्य जितने प्रमाणिक होंगे अनुसन्धान में उतनी ही वैज्ञानिकता होगी तभी अनुसन्धान के सत्य तक पहुंचा जा सकता है।

शोधार्थी ने शोध कार्य को गहन रूप प्रदान करने के लिए शहडोल जिले का विकासखण्ड सोहागपुर के बैगा जनजाति में परम्परागत एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

1. शोध कार्य के लिए शहडोल जिले की सोहागपुर विकासखण्ड के बैगा जनजाति का चुनाव किया गया हैं।
2. अध्ययन के लिये 300 परिवारों का चुनाव किया जायेगा।
3. अध्ययन में 10 ग्रामों से 30–30 परिवारों का चयन किया गया है।
4. आंकड़ों एवं सूचनाओं के संकलन के लिये साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति को अपनाया गया है।
5. निदर्शन पद्धति के द्वारा 300 बैगा परिवारों का चयन किया गया है, इन्हीं 300 परिवारों का प्राथमिक सर्वेक्षण कर लाटरी विधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

शहडोल जिला प्रायद्वीप भारत के उत्तरीय–पूर्वी भाग में विन्ध्य एवं सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित पर्वतीय एवं पठारी प्रदेश है। 23030' उत्तरी अक्षांश कर्क रेखा इस जिले को उत्तर एवं दक्षिण लगभग दो समान भागों में विभक्त है। 820 पूर्वी देशांतर रेखा जो भारत के मध्य से गुजरती है इस जिले के पूर्वी भाग से होकर जाती है। अतः शहडोल भारत के लगभग मध्य में स्थित है।

शहडोल जिला मध्यप्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में 23028' नार्थ 81035' ईष्ट पर स्थित है। वर्तमान में शहडोल से अनुपपुर पृथक जिला बनाया गया है। जिसके क्षेत्रफल में कमी हुई है। अब शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड सोहागपुर का क्षेत्रफल 778 वर्ग किलोमीटर है। शहडोल जिले में पाँच विकासखण्ड– सोहागपुर, ब्योहारी, जयसिंह नगर, गोहपारू, बुढ़ार हैं जिनमें शोध के लिए सोहागपुर विकासखण्ड को चुना गया है।

शहडोल जिले की कुल जनसंख्या (2011 के अनुसार) 100565 है। जिसमें 51 प्रतिशत पुरूष एवं 49 प्रतिशत महिलाएं है। यहॉ का साक्षरता का प्रतिशत 80 प्रतिशत है, जिसमें 86 प्रतिशत पुरूष एवं 72 प्रतिशत महिलाएं साक्षर है। जनगणना 2011 के अनुसार शहडोल जिले में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 700651 है जिसमें 351539 पुरूष एवं 349112 महिलाएं है, जो कि सम्पूर्ण आबादी का 44.48 प्रतिशत है। शहडोल जिले में जनजातियों का लिंगानुपात 993 है। अध्ययन क्षेत्र सोहागपुर में बैगाओं के 67 गॉव है जिनमें 86 टोले हैं। जिनकी कुल जनसंख्या 15690 है। जिनमें 8500 पुरूष एवं 7190 महिलाएं है।

सामाजिक संरचना

सामाजिक संरचना के अन्तर्गत जनजातीय स्थिति, परिवार एवं विवाह आर्थिक जीवन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण किया गया है। भारत के अनुसूचित जनजातियॉ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं बौद्धिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं, कई प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्थाओं का जन्म, विकास एवं पतन हुआ, लेकिन अभी भी इन जनजातियों की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया परिणाम स्वरूप वर्तमान में जनजातियों की समस्याऍ उग्र एवं भयावह हो गई हैं।

मध्यप्रदेश में 40 जनजातियॉ निवास करती है। भील सबसे अधिक जनसंख्या वाली जनजाति है जिनकी जनसंख्या 4618068 है जो जनजातीय जनसंख्या का 37.7 प्रतिशत है। गोंड मध्यप्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है गोंडो की जनसंख्या 4357918 है जो कि सम्पूर्ण जनजाति का 35.6 प्रतिशत है। कोल, कोरकू, सहरिया और बैगा क्रमशः अधिक जनसंख्या वाली जनजातियॉ है।

बैगा जनजाति जनजाति के परिवार का स्वरूप क्रमशः 95 एवं 5 प्रतिशत है अर्थात् 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं का परिवार एकांकी है। तथा 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का परिवार संयुक्त पाया गया। एकाकी परिवार का मुख्य कारण आधुनिक जीवन शैली का उनके जीवन में प्रवेश है। विवाह के बाद पुत्र एक या दो वर्ष बाद माता–पिता से अलग हो जाते है। संयुक्त परिवार यहॉ के बैगा जनजातियों में विलुप्तता की अवस्था में है।

बैगा जनजाति में पैठुल विवाह 30 प्रतिशत होता है, मंगनी विवाह 20 प्रतिशत, लैमना विवाह 15 प्रतिशत, लमसेना एवं उधरिया विवाह क्रमशः

10–10 प्रतिशत तथा उठवा विवाह 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दी। इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि परम्परागत (मंगनी विवाह) सिर्फ 20 प्रतिशत बैगा परिवारों में होना पाया गया। ले भगा, ले भगी, उधरिया विवाह, एवं पैठुल विवाह का कुल प्रतिशत 60 प्रतिशत है। जो कि प्रेम विवाह का ही स्वरूप है जिसे आधुनिक समाज में स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

बैगाओं द्वारा 15 प्रतिशत वस्त्र में, 10 प्रतिशत भोजन में, 10 प्रतिशत चिकित्सा में, 10 प्रतिशत मकान में, 05 प्रतिशत शिक्षा में, 15 प्रतिशत मनोरंजन में, 30 प्रतिशत धार्मिक व सामाजिक आयोजन में, 05 प्रतिशत अन्य मदों में व्यय करते हैं। जबकि पूर्व में बैगाओं में मकान, शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा आदि में व्यय न्यून मात्रा में था वर्तमान पीढ़ी के बैगाओं में चिकित्सा, मनोरंजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा के प्रतिशत व्यय में वृद्धि हुई है।

बैगा जनजाति की परम्परागत चिकित्सा

बैगा जनजाति के लोग अभी भी इन जड़ी–बूटियों और तंत्र–मंत्र से अपना उपचार करते हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति पर उन्हें जरा भी विश्वास नहीं है। वे अपने रोगों के उपचार के लिए आज भी डॉक्टर या किसी बाहरी व्यक्ति की सहायता नहीं लेते है। वे स्वयं ही जड़ी–बूटियों की सहायता से अपनी शारीरिक बीमारी का इलाज कर लेते है। यह कटु सत्य भी है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति (एलौपेथी) किसी भी बीमारी को अविलंब ठीक तो कर देती है, परन्तु वह बीमारी जड़ से ठीक नहीं होती है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति से इलाज करने वाले चिकित्सकों को आज भी अनेकों बीमारियों में आयुर्वेद का सहारा लेना पड़ता है।

परम्परागत चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत जनजातीय क्षेत्र में बैगा व गुनिया रोगियों का जड़ी–बूटियों एवं तंत्र–मंत्र से उपचार करता है। प्रायः प्रत्येक बीमारी के लिए अलग–अलग जड़ी बूटी होती हैं बैगा ग्रामों के अधिकांश बैगाओं को इन जड़ी–बूटियों का ज्ञान होता है।

इन जड़ी–बूटियों से तैयार की गई औषधियों के सेवन करने से बीमारियों में स्थाई सुधार होता है ये औषधियॉ बीमारियों को जड़ से खत्म कर देती है। इन जड़ी–बूटियों के सेवन से किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव नहीं होते हैं। ये अपने अनुभव से अनेकों बीमारियों का इलाज कर लेते हैं। इनको अपनी चिकित्सा पद्धति पर अटूट विश्वास रहता है। असाध्य रोगों की चिकित्सा जड़ी–बूटियों के अलावा गुनियों के द्वारा ही की जाती है, गुनिया अपना पूरा ज्ञान अपने शिष्यों को नहीं देते जिससे असाध्य बीमारियों की चिकित्सा पद्धति लुप्त होती जा रही है।

गठियावात या जोड़ों के दर्द में बजुर गांठ के कंद को पीसकर पानी के घोल में दिन में तीन–चार बार पांच दिनों तक पिलाने से राहत मिलती है इसके कंद को उबालकर उससे सिकाई करने से भी गठिया वात में राहत मिलती है। आलूकस बांदा के रस को लगाने तथा सिकाई करने से जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। वायविड़ग की जड़ को खौलते पानी में उबालकर इसके गरम पानी को कपड़े द्वारा जोड़ां को सेंकने से जोड़ों का दर्द समाप्त हो जाता हैं, कुंभी के पौधे की पत्तियों के रस को दिन में तीन बार तीन दिनों तक पिलाने से जोड़ों का दर्द समाप्त हो जाता है। किये कंद के कांदा के सेवन से भी गठिया एवं वात रोग समाप्त हो जाता है। पेट या गाल ब्लैड़र में पथरी बन जाने या पेशाब में जलन होने पर सहजन पेड़ की जड़ को पीसकर उसके अर्क का सुबह शाम तीन दिनों तक सेवन करने से पथरी घुलकर निकल जाती है।

98 प्रतिशत बैगा उत्तरदाता स्वयं की चिकित्सा पद्धति में विश्वास करते हैं इन्हें अन्य किसी भी चिकित्सा पद्धति में विश्वास नहीं है। 2 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी विश्वास करते हैं। अर्थात आवश्यकतानुसार ये लोग एलोपैथिक चिकित्सक के पास जाकर रोगों का उपचार कराते हैं। अर्थात् अध्ययन क्षेत्र के 300 उत्तरदाता बैगा जनजाति के लोग अपनी परम्परागत चिकित्सा विधियों से संतुष्ट हैं।

80 प्रतिशत गैर जनजातीय उत्तरदाता जड़ी–बूटियों के उपचार से रोगमुक्त हो जाते हैं, ऐसा उत्तरदाताओं ने बताया। 8 प्रतिशत लोग यह मानते हैं कि झॉड़–फूंक से कई बीमारियॉ ठीक हो जाती हैं जिनमें ये बैगा सिद्धहस्त है। 7 प्रतिशत लोग तंत्र–मंत्र के प्रयोग को उचित मानते हैं जिससे इन्हें स्वस्थ्य लाभ मिल जाता है। 5 प्रतिशत उत्तरदाता टोटका से रोगमुक्त होना बताया।

चिकित्सा पद्धतियों का मूल्यांकन

बैगा जनजाति प्रकृति की गोद में पलता, बढ़ता है। इनका सारा जीवन जंगलों एवं पहाड़ों में गुजरता है वनों से खाद्य पदार्थ एकत्रित कर भोजन की व्यवस्था करते है। स्वास्थ्य के लिए वन औषधियों का प्रयोग अपने पारम्परिक अर्जित ज्ञान के आधार पर करते हैं।

बैगा जनजाति की चिकित्सा पद्धति का मूल्यांकन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि ये लोग पारम्परिक चिकित्सा पद्धति पर आश्रित है, जिनका प्रतिशत 98 है। मात्र 2 प्रतिशत बैगा आधुनिक चिकित्सा (एलोपैथिक) पर विश्वास करते हैं।

60 प्रतिशत बैगा उत्तरदाता आधुनिक चिकित्सा को नहीं अपनाने का कारण देवी–देवताओं का भय बताते हैं। उनका मानना है कि रोगों की उत्पत्ति कारण देवी–देवता होते हैं। यदि अपनी विधियों के अलावा किसी अन्य विधि से रोगों का उपचार किया गया तो हमारे देवी–देवता नाराज हो जायेंगे जिससे व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। 30 प्रतिशत उत्तरदाता एलोपैथी या अन्य विधि से रोगों का उपचार नहीं कराते इनका मानना है कि कुछ बीमारियॉ भूत–प्रेत जनित हैं जिनका उपचार उसी सन्दर्भ में किया जाना चाहिए अन्यथा प्रेत–आत्माऍ क्रूद्ध हो जाती हैं। प्रेम–आत्मा क्रुद्ध हो जाने पर सारे बैगा समुदाय यहॉ तक सम्पूर्ण गॉव में भयंकर विनाश होता है। 5 प्रशित बैगा उपरोक्त दोनों कारणों को उत्तरदायी मानते हैं।

बैगा जनजाति के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक

बैगा जनजातियों में अज्ञानता, अशिक्षा तथा बाहरी सम्पर्क में आने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं ने जन्म लिया है। आदिम बैगाओं का स्वास्थ्य पर्यावरण के अनुकूल होता था। पर्यावरण से सामंजस्य इनकी शारीरिक विशेषता रही है। इसीलिए इन्हें 'प्रकृति पुत्र की संज्ञा दी गई है। प्रकृतिक संसाधनों से ही इनके दैनिक जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाया करती थी। मानवीय आवश्यकताओं ने प्राकृतिक संसाधनों से छेड़–छाड़ करना प्रारम्भ किया, प्रकृतिक संसाधनों का लगातार दोहन पर्यावरण को विखंडित किया है।

बैगा जनजाति के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन किया गया है, 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा नदी से घरेलू उपयोग और पीने के लिये जल प्राप्त किया जाता है। कुऑ एवं हैण्डपम्प से 25 प्रतिशत उत्तरदाता, 21 प्रतिशत बन्धी, 4 प्रतिशत झरना, 20 प्रतिशत जंगली नालों से जलापूर्ति करते हैं। उत्तरदाताओं द्वारा जिन जल स्रोतों का उपयोग किया जा रहा है वो प्रदूषण मुक्त नहीं कहे जा सकते हैं।

निष्कर्ष एंव सुझाव –

बैगा जनजाति के जीवन के विभिन्न पक्षों का समन्वित प्रभाव उनके सवास्थ्य को निर्धारित करता है, इस सन्दर्भ में वर्तमान शोध के अन्तर्गत शहडोल जिले के सोहागपुर विकासखण्ड में जीवन यापन करने वाले बैगा जनजाति में परम्परागत एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन की प्रमुख समस्या के रूप में चयनित कर तत्सम्बन्धी स्थितियों का विश्लेषण किया गया है।बैगा जनजाति वर्तमान में भी अपनी परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों पर अटूट विश्वास करती है, और उन्हीं विधियों एवं प्रक्रियाओं से बीमारियों का इलाज करते हैं। लेकिन सरकार के प्रयास एवं सामाजिक परिवेश

के सम्पर्क में आने से आधुनिक चिकित्सा की ओर आकर्षित हो रहे है यद्यपि इसकी प्रक्रिया अत्यन्त धीमी है।

शोध अध्ययन में निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते है–

1. बैगा जनजाति के लिए मोबाइल हास्पिटल की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. बैगा जनजाति के परम्परागत चिकित्सकों (वैद्य) को साथ ही आधुनिक चिकित्सा पद्धति का ज्ञान दिया जाना चाहिए।
3. फर्स्ट एण्ड बॉक्स के साथ कुछ दवाएँ वाक्सों में इनके पंचायत घेरा, पड़ोस के विद्यालय या इन्हें स्वयं रखने के लिए दिया जाए।
4. बैगा जनजाति जड़ी–बूटी की दवाइयों पर अधिक विश्वास करती हैं, इस कारण जड़ी–बूटियों के सम्बन्ध में नये वैज्ञानिक विश्लेषण होने चाहिए।
5. कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए, जो इनके जीवन आदतें और प्रथाओं को गहरा धक्का पहुँचायें।
6. धार्मिक अंध–विश्वासों, जादू–टोना, भूत–प्रेत आदि विचारों पर परिवर्तन किया जावे।
7. इनका स्वास्थ्य अच्छा रहें, इसके लिए गॉवों में मनोरंजन, संगीत, खेलकूद आदि कार्यक्रम चलाया जाये।
8. मकान बनाने के लिए जमीन दी जानी चाहिए, जिससे घुमक्कड़ जीवन से मुक्ति मिल सके।
9. बैगा समाज के वैद्य को आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों का प्रशिक्षण देकर उनकी परम्परागत चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
10. आधुनिक तकनीकि कृषि उपकरणों को निःशुल्क बैगा जनजाति को प्रदान करना।
11. सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए जन जागृति अभियान चलाना चाहिए।
12. महिलाओं को विशेष मनोरंजनात्मक चिकित्सा शिक्षा दिया जाना चाहिए। दक्ष हो जाने पर दाई, आशा, स्वास्थ्य कार्यकर्ता की सरकारी सेवा में लेना चाहिए, ताकि इनके परम्परागत ज्ञान का लाभ समाज को प्राप्त हो सके।
13. बैगाओं के प्रौढ़ शिक्षा को अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा का दर्जा प्रदान किया जाये और कक्षा–पॉच एवं कक्षा–आठ तक अध्ययन की अंकसूचियॉ दी जाए जिसका उपयोग सरकारी / अर्द्धसरकारी सेवा में कर सके।
14. इनकी सांस्कृतिक विरासत से छेड़–छाड़ किये बिना नवीन योजनाओं का संचालन करना चाहिए।
15. इनकी बस्तियों के आस–पास कृषि, पशुपालन, मुर्गीपालन, मत्स्य पालक, मधुमक्खी पालन के प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाये, ताकि परम्परागत ज्ञान के साथ नवीन विधियों को ये लोग जान सके।
16. इन्हें प्राकृतिक जड़ी–बूटियों के विष बनाने का ज्ञान है जिसका उपयोग ये लोग तीर के नुकीले हिस्से से करते हैं। इस तकनीकि का विकास कर अन्य चिकित्सकीय कार्यो में प्रयोग कर सकते है।
17. इनके गॉव में सामुदायिक भवन बनाना चाहिए इस भवन में टेलीविजन, टेलीफोन जैसी अत्याधिक सुविधाएँ प्रदान किया जायें ताकि ये लोग नवीन चिकित्सा विधियों एवं औषधियों का ज्ञान प्राप्त कर सके। इस प्रकार परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ आधुनिक चिकित्सा पद्धति से जोड़ा जा सकता है।
18. कम आयु में विवाह और संतानोत्पत्ति रोकने तथा स्वास्थ्य जागरूकता पर जोर देने के लिए सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त सूचना, शिक्षा एवं संचार सम्बंधी रणनीतियों की आवश्यकता है।
19. प्राथमिक स्कूल के बच्चों की रक्तात्पता और मल्टी विटामिन की कमी से होने वाली बीमारियों की नियमित रूप से वर्ष में कम–से–कम दो बार परीक्षण किया जाना चाहिए। उन्हें वर्ष में दो बार कृमिरहित बीमारी और रक्तात्पता के मुख्य कारण है। उन्हें आयरन और मल्टी विटामिन की गोलियॉ दी जानी चाहिए।
20. आयोडीन की कमी से घेंघा एवं अन्य मानसिक, शारीरिक रोग होते हैं आयोडीन की कमी को पूरा करने के लिए निःशुल्क बैगाओं को आयोडीन युक्त नमक वितरित किया जाना चाहिए।

उपरोक्त सुझावों को ध्यान में रखकर अगर योजना और कार्यक्रम चलाये जाएँ तो अवश्य ही बैगा जनजाति में चिकित्सा के आधुनिक पद्धतियों को अपनाने के प्रति रूझान उत्पन्न हो सकता है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि इनकी परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों को नुकसान पहुँचाये बिना इन्हें आधुनिक चिकित्सा (एलोपैथ) से जोड़ा जाएँ। सरकार को वन औषधियों को प्राप्त कर उचित रकम देना चाहिए ताकि इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. गुप्त नर्मदा प्रसाद : बुंदेलखण्ड की लोक संस्कृति का इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–1988
2. अखिलेश, एस. : सामाजिक मानवशास्त्र, साहित्य प्रकाशन एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा– 1997
3. मीणा, लक्ष्मीनारायण: मीणा जनजाति : एक परिचय, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल–1991
4. शांति महु : गुदना और मान्यतायें, चौमासा, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद, भोपाल–1997
5. शर्मा, बलदेव : आदिवासी विकास का एक सैद्धांतिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल–1986
6. तिवारी कपिल (सम्पादन): आदिवासी लोककथाएँ, गोंडी पब्लिक ट्रस्ट, मण्डला (म0प्र0)–1989
7. तिवारी, वी0के0 : भारत की जनजातियॉ, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, मुम्बई, सन्– 1998
8. अग्रवाल, वासुदेवशरण : पृथ्वीपुत्र, सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली–1949
9. बघेल, डी0एस0 : सामाजिक अनुसंधान, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा– 1999
10. चौरे, नारायण : आदिवासियों के घोटुल, विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर–1994
11. तिवारी, डी0एन0 : वन आदिवासी एवं पर्यावरण, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद–2002
12. शर्मा, राजीव लोचन : जनजातीय जीवन और संस्कृति सहचारी प्रकाशन प्रसारण, कानपुर– 1967
13. नदीम हसनैन : जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–2006
14. यादव, मरकंडेय सिंह : आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 1994
15. तिवारी, डी.एन. : वन आदिवासी एवं पर्यावरण, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद–2002
16. विद्यार्थी, एल.पी. : भारतीय आदिवासी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1975
17. श्रीवास्तव, ए.आर.एन. : जनजातीय भारत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004

VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

18.तिवारी, शिवकुमार एवं शर्मा, कमल : मध्यप्रदेश जनजातियॉ समाज एवं व्यवस्था, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2002
19.उत्प्रेती, हरिश्चन्द्र : भारतीय जनजातियॉ संरचना एवं विकास राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2002
20.नायडू, पी.आर. : भारत के आदिवासी विकास की समस्याऍ, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2002
21.निरगुणे, बसन्त : आदिर्वत मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियॉ महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इन्दौर, 2004

रोशनलाल सिंह
अतिथि विद्वान , समाजशास्त्र , शासकीय महाविद्यालय देवेन्द्र नगर जिला पन्ना(म. प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org